## कैलास गौतम की कविता/ गान्ही जी

सिर फूटत हौ, गला कटत हौ, लहू बहत हौ, गान्ही जी
देस बंटत हौ, जइसे हरदी धान बंटत हौ, गान्ही जी
बेर बिसवतै रूवा चिरई रोज ररत हौ, गान्ही जी
तोहरे घर क रामै मालिक सबैहत हौ, गान्ही जी

हिंसा राहजनी हौ बापू, हौ गुंडई, डकैती, हउवै
देसी खाली बम बनूक हौ, कपड़ा घड़ी बिलैती, हउवै
छुआछूत हौ, ऊंच नीच हौ, जात-पांत पंचइती हउवै
भाय भतीया, भूल भुलइया, भाषण भीड़ भंड़इती हउवै

का बतलाई कहै सुनै मे सरम लगत हौ, गान्ही जी
केहुक नांही चित्त ठेकाने बरम लगत हौ, गान्ही जी
अइसन तारू चटकल अबकी गरम लगत हौ, गान्ही जी
गाभिन हो कि ठांठ मरकहीं भरम लगत हौ, गान्ही जी

जे अललै बेइमान इहां ऊ डकरै किरिया खाला
लम्बा टीका, मधुरी बानी, पंच बनावल जाला
चाम सोहारी, काम सरौता, पेटैपेट घोटाला
एक्को करम न छूटल लेकिन, चउचक कंठी माला

नोना लगत भीत हौ सगरों गिरत परत हौ गान्ही जी
हाड़ परल हौ अंगनै अंगना, मार टरत हौ गान्ही जी
झगरा क% जर अनखुन खोजै जहां लहत हौ गान्ही जी
खसम मार के धूम धाम से गया करत हौ गान्ही जी

उहै अमीरी उहै गरीबी उहै जमाना अब्बौ हौ
कब्बौ गयल न जाई जड़ से रोग पुराना अब्बौ हौ
दूसर के कब्जा में आपन पानी दाना अब्बौ हौ
जहां खजाना रहल हमेसा उहै खजाना अब्बौ हौ

कथा कीर्तन बाहर, भीतर जुआ चलत हौ, गान्ही जी
माल गलत हौ दुई नंबर क, दाल गलत हौ, गान्ही जी
चाल गलत, चउपाल गलत, हर फाल गलत हौ, गान्ही जी
ताल गलत, हड़ताल गलत, पड़ताल गलत हौ, गान्ही जी

घूस पैरवी जोर सिफारिश झूठ नकल मक्कारी वाले
देखतै देखत चार दिन में भइलैं महल अटारी वाले
इनके आगे भकुआ जइसे फरसा अउर कुदारी वाले
देहलैं खून पसीना देहलैं तब्बौ बहिन मतारी वाले

तोहरै नाव बिकत हो सगरो मांस बिकत हौ गान्ही जी
ताली पीट रहल हौ दुनिया खूब हंसत हौ गान्ही जी
केहु कान भरत हौ केहू मूंग दरत हौ गान्ही जी
कहई के हौ सोर धोवाइल पाप फरत हौ गान्ही जी

जनता बदे जयंती बाबू नेता बदे निसाना हउवै
पिछला साल हवाला वाला अगिला साल बहाना हउवै
आजादी के माने खाली राजघाट तक जाना हउवै
साल भरे में एक बेर बस रघुपति राघव गाना हउवै

अइसन चढ़ल भवानी सीरे ना उतरत हौ गान्ही जी
आग लगत हौ, धुवां उठत हौ, नाक बजत हौ गान्ही जी
करिया अच्छर भइस बराबर बेद लिखत हौ गान्ही जी
एक समय क बागड़ बिल्ला आज भगत हौ गान्ही जी

# वर्ष का पहला दिन, धर्म से जोड़कर न देखें

**कमल**

यह वह वर्ग है जो हमेशा दु:खी और परेशान रहता है । किसी ने कोई त्यौहार मना लिया तो उससे परेशान, खुद ने मनाया तो दूसरे को परेशान करने के उद्देश्य से हुड़दंग मचाएगा , कोई इससे अधिक सुंदर तो परेशान, अच्छा खा रहा है तब परेशान, कोई नौकरी कर रहा है, अच्छा कमा रहा है तो परेशान, यहाँ तक कि कोई अपनी आस्था के अनुसार अपने भगवान, देवता, अल्लाह या गॉड की पूजा या साधना कर रहा है , उससे भी परेशान।

विश्व भर में इस तरह के लोग हैं जो खुद परेशान हैं इससे अधिक चिंता की बात है कि ये विश्व भर को परेशान कर रहे हैं और सभ्यता के विकास के साथ ही ऐसे परेशान लोगों की संख्या में निरन्तर इजाफा हो रहा है, होता जा रहा है क्योंकि इन्हें इसी तरह सोचने हेतु निर्मित किया गया है ।

मेरे एक मित्र यूनिवर्सिटी में सहायक प्रोफेसर हैं, दक्षिणपंथी हैं अत: पहले उनका मेसेज आता था कि जब ईसाई हमारा नववर्ष नहीं मनाते तो हम क्यों मनाएं? ईसाई हमारा त्यौहार नहीं मनाते तो हम क्यों मनाएं ,इसी तरह ब्लाँ ब्लाँ ब्लाँ। खैर! लेख का उद्देश्य यह बताना नहीं है कि कौन क्या मेसेज भेजते हैं ? बल्कि इससे भिन्न है।

इस तरह के मैसेज भेजने वाले अनेकों लोगों से जब बात हुई तो उनसे जो प्रश्न पूछा गया वह सिर्फ इतना था, 'वर्ष क्या है? क्या सिर्फ कैलेंडर बदलना वर्ष बदलना है? हमें वर्ष या तिथियों की आवश्यकता क्यों पड़ती है? इसके लिए क्या पैरामीटर अपनाए गए? हमारे देश में कौन कौन से कैलेंडर हैं ? शक संवत या विक्रमी संवत के विषय में आप क्या जानते हैं ? और , अंतिम प्रश्न कि विश्व भर ने ग्रिगेरियन कैलेंडर क्यों स्वीकार किया?

मैं आश्चर्यचकित रह गया कि अधिसंख्य विरोध का झंडा उठाने वाले लोगों को या वर्तमान पढ़े -- लिखे , शिक्षित माने जाने वाले अनेक लोगों को भी इस विषय में कुछ भी मालूम नहीं । वे केवल भेड़चाल का हिस्सा हैं ।

वर्ष या साल कोई धार्मिक विश्वास का प्रश्न नहीं बल्कि यह तो समय को मापने की इकाई है जिसका संबन्ध धर्म से है ही नहीं । यह तो भूगोल, खगोलशास्त्र और प्राकृतिक भौतिक विज्ञान का विषय है , इसे जबर्दस्ती धर्म का विषय "माना" जाता रहा है और करोड़ों लोग बस मानकर ही जीवन गुजार देते हैं । विश्व भर में आज जो मार काट चल रही है उसका सबसे बड़ा कारण यही है कि लोग बस मानकर चल रहे हैं , तर्क से सोचना बंद है ।

पृथ्वी सूर्य का चक्कर लगाने में "365 दिन, 5 घण्टे , 48 मिनट और 45.51 सेकंड" का समय लगाती है इसे पृथ्वी का "परिक्रमण काल" कहते हैं , यही काल "वर्ष" है । इसी तरह पृथ्वी अपने अक्ष पर भी घूमती है जिसे उसका "परिभ्रमण काल" कहते हैं जिससे दिन और रात होते हैं । पृथ्वी अपने अक्ष में घूमने में "23 घण्टे , 56 मिनट और 4 सेकंड" का समय लेती है जिसे वैज्ञानिक इतना ही मानते हैं जबकि गणना की आसानी के लिए इसे 24 घण्टा मान लिया जाता है । इस समय अंतर को वैज्ञानिक ठीक करते रहते हैं ।

वर्ष , मास और दिन "समय" की गणना की इकाई हैं जिनका धर्म से कोई लेना देना नहीं । जब सभ्यता के विकास में मनुष्य ने इतना विकास कर लिया कि उसे दिन -- रात होने और पृथ्वी , चन्द्रमा और सूर्य के घूमने का पता चला और पृथ्वी पर ऋतुओं के बदलाव होने का पता चला तो उसने सोचा कि यह क्यों हो रहा है ?

इसी खोज का परिणाम था कि वह पृथ्वी की अक्ष पर घूमने और सूर्य के घूमने के निष्कर्ष तक पहुँच सका । उसे अब गणना की आवश्यकता होने लगी क्योंकि उसे पता चल गया था कि यह क्या प्राकृतिक चक्र है। अत: विश्व भर में कैलेंडर बनाये जाने लगे , तिथियाँ बनाई जाने लगी । कहा जाता है सबसे पहले सीजर ने कैलेंडर बनवाया । इसी तरह भारत में अनेक राजाओं के काल में कैलेंडर बनाये गए जिसमें "शक संवत" और "विक्रमी संवत" प्रमुख हैं । भारत के ज्योतिषाचार्य चन्द्र और सूर्य की गति के आधार पर कैलेंडर बना पाने में सफल रहे मगर यह त्रुटिपूर्ण साबित हुआ क्योंकि गणना का आधार कमजोर था अत: ज्योषितियों ने अर्धमास और अधिमास की कल्पना की ।

इतिहास लेखन में तिथियों का और किसी भी वस्तु की आयु निर्धारण में इसी वर्ष, मास , दिन की आवश्यकता थी अत: कैलेंडर का निर्माण किया गया ।

हिंदुओं का वैज्ञानिक विकास 5वीं शदी के बाद रुक गया और तंत्र -- मंत्र और कल्पित कहानियों में समय बीतने लगा मगर पुनर्जागरण के बाद ईसाई जगत में उथल -- पुथल हो गयी । विज्ञान का चमत्कारिक विकास हो गया जिस कारण वे मानव सभ्यता के विकास में अभूतपूर्व योगदान देने में सफल रहे। यूरोपीय वैज्ञानिकों ने समय की छोटी सी छोटी त्रुटियों को खत्म कर गणना को पूर्णतया वैज्ञानिक बना दिया और इसी आधार पर ग्रिगेरियन कैलेंडर का परिष्कार किया अत: विश्व भर ने अपने राजकार्य में इसी कैलेंडर को स्वीकार किया है जिसमें दिनों की गणना और वर्ष के समय में कोई अंतर नहीं है और जो पूर्णतया वैज्ञानिक गणना पर बनाया गया है अत: भारत सरकार ने भी राजकीय कार्यों में इसे ही स्वीकार किया है जबकि धार्मिक कार्य धर्म संवत के अनुसार ही होते हैं ।

# यह सप्ताह / मित्रता, एक दृष्टिकोण

कोलंबा कालीधर

हर स्कूल में लिखा होता है, "उसूल " तोड़ना मना है ।

हर बाग में लिखा होता है, "फूल" तोड़ना मना है ।

हर खेल में लिखा होता है, "रूल" तोड़ना मना है।

काश ....रिश्ते, परिवार और दोस्ती में भी लिखा होता किसी का "साथ" छोड़ना मना है। काश ऐसा होता तो.....

"ना उम्र की सीमा हो और ना हो जन्म का कोई बंधन"

इन पंक्तियों का समावेश हम/आप को आजकल प्रेम के विषय में नहीं, बल्कि- "मित्रता के विषय में याद आनी चाहिये। क्योंकि मित्रता का सम्बन्ध हम-सभी को बहुत भला लगता है। न तो यह ईश्वर द्वारा स्व-प्रदत्त है और ना ही परिवार या समाज द्वारा जबरन थोपा-सा ही है। यह एक ऐसा रिश्ता है, जिसे बनाना और कायम रखना/ संभालना आदि सब कुछ हमारे/आपके हाथ में ही होता है। और इस रिश्ते में उम्र, जन्म, आर्थिक या सामाजिक स्थिति आदि की बाध्यता भी महसूस नहीं होती। बस, मात्र दिल मिलने की देर होती है और यह मित्रता, "आपसी-साथ निभाने के मामले मे" हमारे सगे-सम्बन्धियों को भी बहुत-ही पीछे छोड़ जाती है।

रिश्तों की बगिया में एक रिश्ता नीम के पेड़ जैसा भी रखना;

जो सीख भले ही कड़वी देता हो पर तकलीफ में मरहम भी बनता है।

परिवर्तन से डरना और संघर्ष से कतराना,मनुष्य की सबसे बड़ी कायरता है।जीवन का सबसे बड़ा गुरु वक्त होता है,क्योंकि जो वक्त सिखाता है वो कोई नहीं सीखा सकता.. रिश्ते खराब होने की एक वजह ये भी है, कि लोग अक्सर टूटना पसंद करते है पर झुकना नहीं!!

हमें स्कूल में त्रिकोण, चौकोण, लघुकोण, समकोण, षटकोण इत्यादि सब पढ़ाया जाता है.....पर...जो जीवन में हमेशा उपयोगी है वो कभी पढ़ाया नही जाता .... ! वो है...."दृष्टिकोण"।

ऋषिपाल चौहान
चेयरमैन, जीवा पब्लिक स्कूल

## भक्ति का वास्तविक स्वरूप

**ईश्वरीय शक्ति के आगे कोई शक्ति नहीं है, यह बात हम सभी जानते हैं। ईश्वर ने ही इस समस्त ब्रह्माण्ड की रचना की है। हम मनुष्यों को सबसे अधिक बुद्धि एवं शक्ति प्रदान की है। फिर भी हम जब भी किसी संकट में होते हैं तो अनायास ही भगवान को याद करते हैं और कहते हैं, हे प्रभु मुझे इस संकट की स्थिति से उबार लो। इस संसार में अनेक धर्म जाति, संप्रदाय है सबके पूजा करने की विधि भी भिन्न-भिन्न है। लेकिन सभी उस ईश्वरीय शक्ति के आगे नतमस्तक होते हैं जिसके आगे और कोई शक्ति कार्य नहीं करती हैं। ईश्वर की इस अराधना को भक्ति का नाम देते हैं। यह अच्छी बात है कि मनुष्य धार्मिक कार्यो में अपना समय व्यतीत कर रहा है। परन्तु वास्तविक भक्ति क्या है ? क्या सिर्फ पूजा पाठ, उपवास और भजन करना ही भक्ति है। हम जिसकी अराधना करते हैं उसी को आदर्श मानते हैं, हमें अपने आदर्श रूप का अनुसरण करना चाहिए अर्थात ईश्वर के बताए मार्ग पर चलना चाहिए। वास्तविक भक्ति है, मनुष्यता अर्थात मनुष्य सर्वकल्याणकारी हो, सबकी सहायता करें, सबका भला करने की कोशिश करें।**

**भगवान भी हमें यही सीख देते हैं। वे कभी हम से कुछ नहीं चाहते, दुनिया के हर धर्म ग्रन्थ में केवल सबके कल्याण के विषय में ही लिखा गया है। प्रत्येक ग्रन्थ हमें यह सीख देता है कि हम समाज के लिए कल्याणकारी कार्य करें। परन्तु मनुष्य सभी भक्ति छोड़ देता है और अलग राह पर चलता है जिसमें केवल उसका स्वयं का ही कल्याण होता है। हम अपने ईश्वर से यह क्यों नहीं सीखते कि हम अन्य जीवों की रक्षा करें। प्राकृतिक संसाधनों को बचाएँ, अपने गुरूजनों व अभिभावकों का आदर-सम्मान करें क्योंकि अभिभावकों का स्थान भी भगवान समान ही होता है। तो आप सभी वास्तविक भक्ति को पहचानें और उसी मार्ग पर चलें। यदि हम इन्हीं विषयों का अनुसरण करें तो जीवन सफल हो जाएगा।**

## व्यंग्य

# पप्पू की ठाँय ठाँय...मोदी की बाय बाय...

**चौधरी भारत भूषण**

संसद में राफेल पर चल रही गोलीबारी सुनकर घर से बाहर निकला ही था कि गली के नुक्कड़ पर चौधरी साहब हुक्का गुड गुड करते मिल गऐ।

उन्होंने मुझे रोकते हुए कहा भाई 2019 की राम राम, मैंने भी कहा राम राम,उसके बाद उन्होंने फिर कहा भाई पत्रकार महारा इंटरव्यू ले ले अगर तुमने म्हारा इंटरव्यू नहीं लिया तो थारी नौकरी भी ना बचने की।

मैंने कहा अच्छा चौधरी साहब यह बताओ,संसद में राफेल पर राहुल की बहस कैसी लगी ?

अरे भाई क्या बताऊं वह तो ऐसा बोल रहा था जैसे पुलिस वाला बिना गोली के ठाँय ठाँय सी कर रहा हो।

मैंने दूसरा सवाल पूछते हुए कहा चौधरी साहब चौकीदार यानी मोदी जी के बारे में क्या ख्याल है ?

उन्होंने हुक्के में गहरा दम मारते हुए कहा की भाई वह तो ऐसा लग रहा जैसे खेत में खड़ा हुआ पुतला बाय-बाय सी कर रहा हो।

मैंने फिर तीसरा सवाल पूछते हुए कहा 2019 के चुनाव में दोनों के बारे में क्या ख्याल है ?

उन्होंने फिर हुक्के में जोर का दम मारते हुए कहा,

जब बेरोजगार लड़का ठाँय ठाँय करण लगे और जवान लड़की बाय बाय करन लगे तो समझ लो दोनों का इंतजाम करना पड़े,एक को खेत में जोतना पड़े तो दूसरे का ब्याह करना पड़े, तो भाई हम तो 2019 में दोनों ही काम करेंगे।

मैंने चौथा सवाल पूछते हुए कहा, टीवी पर चल रही बहस के बारे में आपका क्या ख्याल है ?

तो चौधरी साहब ने मुझे घूरते हुए कहा,ऐसा लगे जैसे कीर्तन और अजान एक साथ हो रही हो न कीर्तन समझ में आवे,ना अजान का पता लगे।

मैंने पांचवा सवाल पूछते हुए कहा, चौधरी साहब गाय के बारे में आपका क्या ख्याल है ?

उन्होंने छूटते ही कहा, गाय को तो हम स्कूल में ट्यूशन पढ़ाने भेजने लग रहे।

उनके उत्तर सुनकर मैंने कहा,अच्छा चौधरी साहब राम राम दफ्तर में देर हो रही चलता हूं, चौधरी साहब ने कहा भाई हुक्के में दम मारता जा और आखरी बात सुनता जा मैंने कहा बताओ चौधरी साहब, चौधरी साहब ने गंभीरता से कहा जिसे तुम पप्पू समझ रहे थे वो पप्पू तो अब ठाँय ठाँय करनी सीख गया।